प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
पंतनगर, जिला– ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

गाजर घास जागरूकता एवं उन्मूलन सप्ताह का शुभारंभ

पन्तनगर। 16 अगस्त 2024। विश्वविद्यालय में गाजर घास (पार्थेनियम हिस्ट्रोफोरस) जागरूकता एवं प्रबंधन सप्ताह का शुभारंभ नॉरमन ई. बोरलॉग, फसल अनुसंधान केन्द्र पर किया गया, जिसमें कार्यवाहक कुलपति एवं अधिष्ठाता कृषि डा. शिवेन्द्र कश्यप की अध्यक्षता में किया गाया, जिसमें निदेशक शोध डा. अजीत सिंह नैन; विभागाध्क्ष, सस्य विज्ञान विभाग डा. सुभाष चन्द्रा; संयुक्त निदेशक, फसल अनुसंधान केन्द्र, प्रजनक बीज उत्पादन केन्द्र, सी.जी.एम. फार्म, डा. राजेश प्रताप सिंह, डा. आनंद सिंह जीना तथा सस्य विज्ञान प्राध्यापकगण डा. डी.के. सिंह, डा. गुरविन्दर सिंह, डा. (श्रीमती) सुनीता टी. पाण्डेय, निदेशक प्रशिक्षण एवं नियोजन डा. एम. एस. नेगी, डा. जे.पी. पुरवार, प्राध्यापक कीट–विज्ञान, डा. विनोद बाल्यान, फ्रांस के लगभग 20 विद्यार्थियों ने भाग लिया। सभा का संचालन डा. (श्रीमती) विनीता राठौर, सहायक प्राध्यापक ने किया। गोष्ठी का आयोजन अखिल भारतीय समन्वित खरपतवार शोध परियोजना के अन्तर्गत किया गया जिसमें परियोजना के प्राध्यापक डा. तेज प्रताप ने सभी अतिथियों का स्वागत किया तथा गाजर घास जागरूकता सप्ताह के आयोजन तथा गाजर घास से होने वाली मनुष्यों, पशुओं एवं पर्यावरण के नुकसान के बारे में नागरिकों को जानकारी दी। परियोजनाधिकारी डा. एस.पी. सिंह ने इस खरपवार के प्रकोप से ऑस्ट्रेलिया में फसलों में लगभग 60–70 प्रतिशत का नुकसान हो रहा है तथा भारत में भी अकृषित एवं कृषित क्षेत्रों में अकेले खरपतवार से होने वाली नुकसान जैसे मनुष्यों में डरमेटाईटिस, एलर्जी, चर्मरोग, हे फीवर एवं अस्थमा (श्वास) आदि बीमारियॉ तथा पशुओं द्वारा गाजर घास खाने से पशुओं के दूध में कमी तथा विषाक्तता उत्पन्न हो जाती है। डा. सिंह ने एक विडियों भी जारी कि जिसमें वर्ष 2004 से 2023 तक के गाजर घास जागरूकता एवं उन्मूलन कार्यक्रमों में हुए विभिन्न क्रियाकलापों का प्रदर्शन किया। यह कार्यक्रम देशभर में प्रतिवर्ष 16 से 22 अगस्त में आयोजित किया जाता है। कार्यवाहक कुलपति एवं अधिष्ठाता कृषि डा. शिवेन्द्र कश्यप ने बताया कि गाजर घास का समाधान सामूहिक रूप से अभियान चलाकर किया जा सकता है। निदेशक शोध डा. अजीत नैन ने गाजर घास जागरूकता अभियान के महत्व को समझाते हुए विश्वविद्यालय के सभी अनुसंधान केन्द्रों के संयुक्त निदेशकों एवं विद्यार्थियों की सहभागिता को आवश्यक बताया। विभागाध्यक्ष डा. सुभाष चन्द्रा ने विभाग के शिक्षकों, विद्य ार्थियों, किसानों तथा आम जनता की सहभागिता पर प्रकाश डाला तथा इस प्रकार के कार्यक्रमों का निरंतर चलाये जाने की आवश्यकता को बताया। कार्यक्रम मे लगभग 150 लोगों ने प्रतिभाग किया। कार्यक्रम के अंत में डा. विनीता राठौर ने सभी का सहभागिता के लिए आभार व्यक्त किया।

बैनर के साथ अधिकारीगण।